इलाहाबाद, अलीगढ़, सहारनपुर, फर्रुखाबाद, मैनपुरी, मिर्जापुर, सीतापुर जनपदों के लिए।

आलोकवृत्त

नायक का चरित्र- चित्रण

-'महात्मा गाँधी' यशस्वी कवि गुलाब खण्डेलवाल के खण्डकाव्य 'आलोक-वृत्त' के नायक हैं, जो भारतीय स्वतन्त्रता-संग्राम के साथ-साथ सत्य, अहिंसा और सदाचार के सूत्रधार हैं। उनमें मानवोचित दुर्बलताएँ भी हैं, किन्तु वे उनमें सुधार लाकर आत्म-चिन्तन द्वारा एक आदर्श धीरोदात्त नायक बन जाते हैं। संक्षेप में उनके चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं—

1. मानवीय मूल्यों के प्रति आस्था—राष्ट्रपिता गाँधी जी में मानवीय मूल्यों के प्रति घोर आस्था है। वे बचपन से ही मानवीय मूल्यों की स्थापना के लिए लालायित हैं और इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए समुद्र पार जाकर शिक्षा ग्रहण करते हैं–

मन्त्र पुराने काम न देते, मन्त्र नया पढ़ना है।
मानवता के हित मानव का रूप नया गढ़ना है।।
सागर के उस पार शक्ति का कैसा स्रोत निहित है।
ज्ञान और विज्ञान कौन वह जिससे विश्व विजित है।।

2. स्वतन्त्रता के प्रति ललक— महात्मा गाँधी में देश की स्वतन्त्रता के लिए बचपन से ही ललक है। वे उस स्वतन्त्रता की प्राप्ति के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा देते हैं। आजादी की लड़ाई के प्रति पहले से ही तैयार हैं। वे अन्धविश्वास और 33परम्पराओं से आबद्ध घेरे में रहना नहीं चाहते।

3. मातृ-पितृ भक्त— वे माता-पिता के पूर्ण भक्त तथा आज्ञा-पालक सेवक थे। उनकी सेवा में कोई कसर नहीं छोड़ते थे। कवि के शब्दों में—

रुग्ण पिता की सेवा में रहते थे सतत निरत जो
मिल पाये कैसे माँ का आदेश विदेश गमन को
चैन न लेने देती थी चिन्ता मोहन के मन को।।

4. राष्ट्र-प्रेम— भारत राष्ट्र के प्रति उनमें अटूट प्रेम था। इसके लिए तो उन्होंने वकालत तक छोड़ दी और जीवन भर महान कष्ट सहते रहे। इसी कारण वे भगवान् से प्रार्थना करते हैं–

प्रभो ! इस देश को सत्पथ दिखाओ।
लगी जो आग भारत में बुझाओ।
मुझे दो शक्ति इसको शान्त कर दूँ।
लपट में रोष की निज शीश धर दूँ।

सर्गों का साराँश

उत्तर–'आलोक-वृत्त' खण्डकाव्य की कथा गाँधी जी के जन्म से लेकर स्वतन्त्रता-प्राप्ति तक की ऐतिहासिक कथा है। इस कथा को आठ सर्गों में विभाजित किया गया है। कथा इस प्रकार है–

प्रथम सर्ग : भारत का अतीत– कवि भारत के स्वर्णिम अतीत का वर्णन कर तत्कालीन भारत की दशा का वर्णन करता है। इसमें नयी मानवता का जयघोष किया है और गुलाम भारत के जागरण की आवाज ऊँची की है। देश गुलामी की जंजीरों में जकड़ा था। स्वतन्त्रता की प्रथम क्रान्ति के ठीक बारह वर्ष पश्चात् गुजरात प्रदेश के पोरबन्दर नामक स्थान पर महात्मा गाँधी का जन्म हुआ। गाँधी जी के जन्म के साथ ही प्रथम सर्ग समाप्त हो जाता है।

द्वितीय सर्ग : गाँधी जी का प्रारम्भिक जीवन– खण्डकाव्य की कथा दूसरे सर्ग से प्रारम्भ होती है। मोहनदास करमचन्द गाँधी के मन में 'गोरे शासन' के विरुद्ध बचपन से ही चिन्ता व्याप्त हो जाती है। अंग्रेजों से टक्कर लेने के लिए वे अपने को शक्तिशाली बनाना चाहते हैं और इसके लिए वे मांसाहार करने की सोचते हैं। घर से पैसे चुरा-चुराकर चोरी-चोरी मांस खाया करते हैं, किन्तु झूठ और चोरी से वे मन-ही-मन लज्जित होते हैं। फिर अपने रोगी पिता को पत्र लिखकर अपनी कमजोरियों के लिए क्षमा-याचना करते हैं। पिता पुत्र की सच्चाई पर गद्‌गद होकर छाती से लगा लेते हैं।

समय बीतता है। उनकी शादी कस्तूरबा के साथ होती है। मानवीय दुर्बलताओं से प्रेरित बापू भी कस्तूरबा के प्रति आसक्त हो जाते हैं और इसी समय रोग-शैय्या पर पड़े पिता की मृत्यु हो जाती है। बापू को इसका आघात पहुँचता है और वे आत्मचिन्तन व पश्चाताप करते हैं। पुरानी परम्पराओं को तोड़कर उच्च शिक्षा के लिए बापू अपनी माता पुतली बाई से आज्ञा लेकर विदेश जाते हैं और वहाँ अपनी माता को दिये गये वचन के अनुसार वे बराबर 'मद्य, मांस, मदिरादि' से बचते हैं। एक बार पोर्ट स्मिथ शाकाहारी सम्मेलन के प्रतिनिधि के रूप में एक कलुषित स्थान पर पहुँच जाते हैं, जहाँ भगवान की कृपा से पथभ्रष्ट होते-होते बच जाते हैं। अध्ययन समाप्त करके बापू स्वदेश लौटते हैं; किन्तु माता पुतली बाई का देहान्त हो चुका रहता है। वह माता के लिए व्याकुल हो उठते हैं। उन्हें ऐसा प्रतीत होता है, जैसे उनको माता आकाश से कह रही हों–

दुःखी न होना पुत्र न मिल पाऊँ धरती पर मैं।
सौंप गयी हूँ तुझको एक बड़ी माता के कर में।।
कोटि-कोटि पुत्रों के रहते, भी वंध्या सी होती।
माता वह जंजीरों में जकड़ी, सदियों से रोती।।

बापू देश-सेवा का व्रत ले लेते हैं।

तृतीय सर्ग : अफ्रीका प्रवास–बापू अफ्रीका जाते हैं। वहाँ एक गोरा यात्री जाड़े की रात में प्रथम श्रेणी के डिब्बे से बापू को बाहर निकाल देता है। वे रात भर प्लेटफार्म पर ठिठुरते हैं और भारतवासियों की हीनावस्था के सम्बन्ध में चिन्तन करते हैं–

आत्मा बँटी विचार बँटे, बँट गयी जातियाँ दल में।

मानवता बँध गयी इसी मिथ्याभिमान से छल में।।
रंग देखकर ही तन का क्या वह लघु महत् बनाता।
नहीं मनुज ही अपमानित हो रहा मनुज निर्माता।।

बापू विचार-मन्थन करके 'अहिंसा' को 'हिंसा' से शक्तिशाली मानते हैं। वे निश्चय करते हैं कि प्रेम और अहिंसा द्वारा मैं शत्रुओं का हृदय परिवर्तित करूँगा। पाशविक शक्तियों के आगे आत्मशक्ति को जगाऊँगा। इसमें कठिनाई आने पर भले ही मुझे सूली पर चढ़ना पड़े। हृदय-मन्थन के परिणामस्वरूप महात्मा गाँधी को जो अहिंसात्मक प्रतिकार का मार्ग सूझता है, वही बाद में 'सत्याग्रह' नाम से अभिहित होता है। बापू दक्षिणी अफ्रीका में हजारों सत्याग्रहियों का नेतृत्व करते हैं।

चतुर्थ सर्ग : वापस भारत आगमन– अफ्रीका से महात्मा गाँधी भारत वापस आते हैं। गाँधी जी के आह्वान पर देश-बन्धु चितरंजन दास, पं0 मोतीलाल नेहरू, राजेन्द्र प्रसाद, वल्लभ भाई पटेल आदि नेता उनका नेतृत्व ग्रहण करते हैं। सर्ग के प्रारम्भ में चम्पारण के संघर्ष का चित्रण है। गोरे निलहों का किस प्रकार हृदय परिवर्तित किया गया, कवि ने बड़ी सूक्ष्मता से इस सर्ग में विवेचन किया है। इस आन्दोलन की सफलता के पश्चात् खेड़ा सत्याग्रह का वर्णन हुआ है, जिसमें वल्लभ भाई पटेल का चरित्र उभर कर सामने आता है। भीषण अकाल के समय अंग्रेजों द्वारा लगान वसूली का दमन चला। महात्मा गाँधी के नेतृत्व में किसानों ने लगान देना बन्द कर दिया और अंग्रेजों के हिंसात्मक दमन को बापू की अहिंसात्मक विरोध के आगे झुकना पड़ा–

सेना भी क्या करे, नहीं यदि अन्न-वस्त्र मिल पाये।
गाँव-गाँव घर-घर विरोध का दावानल लहराये।।
संगीनों से एक फूल भी खिला नहीं सकते हैं।
बन्दूकों से मार भले दें, जिला नहीं सकते हैं।।

इस अहिंसात्मक क्रान्ति का ब्रिटिश शासन पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा। इससे अंग्रेज काँप गये और फिर एक बार पुनः कोलकाता में क्रान्ति का श्रीगणेश हुआ।

पंचम सर्ग : असहयोग आन्दोलन– प्रारम्भ में असहयोग-आन्दोलन की पृष्ठभूमि तैयार होती है। नागपुर कांग्रेस अधिवेशन के अवसर पर बापू का ओजस्वी भाषण होता है। इसी बीच चौरी-चौरा की घटना हो जाती है। महात्मा गाँधी आन्दोलन को स्थगित कर देते हैं, किन्तु अंग्रेजी सरकार उन्हें गिरफ्तार कर लेती है। अस्वस्थता के कारण जेल की अवधि पूरी किये बिना ही ये छोड़ दिये जाते हैं। अपनी सजा की शेष अवधि तक वे राजनीति से पृथक् रहकर हिन्दू-मुस्लिम-एकता, हरिजनोद्धार, खादी-प्रचार आदि रचनात्मक कार्य करते हैं। इन्हीं दिनों बापू को हिन्दू-मुस्लिम-एकता के लिए इक्कीस दिनों का उपवास भी करना पड़ता है। अनशन का संकल्प लेते हुए बापू कहते हैं–

रुके न बाढ़ घृणा की तो मेरे जीवन का अर्थ नहीं है।
कोई भी बलिदान मनुजता की, सेवा में व्यर्थ नहीं है।।
सत्य अहिंसा की धरती पर क्यों यह रक्तपात मचता है।
मैं सौ बार मरूँ यदि मेरे मरने से भारत बचता है।।

बापू की प्राण-रक्षा के लिए सभी धर्मावलम्बी ईश्वर से प्रार्थना करते हैं और बापू की प्राण-रक्षा हो जाती है। जब बार-बार कहने पर भी अंग्रेजों का ध्यान इस ओर नहीं जाता तो **पं0 जवाहरलाल नेहरू** के नेतृत्व में–"पूर्ण स्वतन्त्रता हमारा उद्देश्य है" का नारा लगाया जाता है।

षष्ठ सर्ग : नमक सत्याग्रह (डाँडी यात्रा)– छठे सर्ग में नमक सत्याग्रह का चित्रण है। बापू बतलाते हैं कि नमक तो सबके लिए भोज्य पदार्थ है। इस पर किसी का नियन्त्रण नहीं होना चाहिए। इस सिद्धान्त को लेकर बापू नमक सत्याग्रह का प्रारम्भ करते हैं। वे डाँडी यात्रा पर पैदल नमक कानून को तोड़ने के लिए चल पड़ते हैं। जेल सत्याग्रहियों से भर जाता है। गोलियाँ चलती हैं, बम के धमाके होते हैं; किन्तु सत्याग्रहियों के उत्साह में कमी नहीं आती। अंग्रेजी सत्ता बापू के इस सत्याग्रह से बदल जाती है। फिर बापू अंग्रेजों द्वारा गोलमेज परिषद् के लिए बुलाये जाते हैं और सन् 1937 में प्रान्तीय स्वराज्य की स्थापना का अधिकार मिल जाता है।

सप्तम सर्ग : जनक्रान्ति– सन् 1942 की जन-क्रान्ति का प्रारम्भ होता है। 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' का नारा बुलन्द होता है। बापू के आह्वान पर सारा देश क्रान्ति की ज्वाला में टूट पड़ता है। फिर साम्राज्यवादी कुचक्र प्रारम्भ होता है। सभी

नेता बन्दी बना लिये जाते हैं, किन्तु क्रान्ति की ज्वाला बुझती नहीं। अंग्रेजों का दमन-चक्र प्रारम्भ होता है। युवकों को गोलियाँ खानी पड़ती हैं। इसी समय कस्तूरबा की मृत्यु हो जाती है। उनकी मृत्यु से बापू को गहरी ठेस पहुँचती है। वे टूट जाते हैं।

अष्टम सर्ग : स्वतन्त्रता– आखिर अन्त में देश स्वतन्त्र होता है। आकाश में तिरंगा फहराने लगता है। किन्तु देशव्यापी हिंसात्मक साम्प्रदायिक उपद्रव से बापू दुःखी हो जाते हैं। वे भगवान से प्रार्थना करते हैं कि हे भगवान इस देश को सच्चा मार्ग दिखलाओ। मुझमें ऐसी शक्ति दो कि मैं इन्हें शान्त कर सकूँ और–

विषमता फूट मिथ्याचार भागे।
सभी का हो उदय, नव ज्योति जागे।।
विजित हों प्यार में तक्षक विषैले।
दयामय ! विश्व में सद्भाव फैले।।

बापू की प्रार्थना के साथ खण्डकाव्य की कथा समाप्त हो जाती है।

खण्डकाव्य का उद्देश्य

उत्तर– काव्य अथवा साहित्य-संरचना सदैव सोद्देश्य होती है। कवि एक लक्ष्य अपने सामने रखकर ही काव्य लिखता है। उद्देश्यानुसार ही विषय खोजकर भावभूमि तैयार करता है। आलोक-वृत्त खण्डकाव्य का भी उद्देश्य श्रेष्ठ मानवीय मूल्यों का प्रतिपादन रहा है। इस काव्य की रचना का उद्देश्य निम्नलिखित बिन्दुओं में विभक्त कर निर्धारित किया जा सकता है—

1. राष्ट्रीय एकता– राष्ट्रीय एकता का प्रतिपादन करना कवि को अभिप्रेत रहा है। हिमालय से कन्याकुमारी तक हम सभी एक हैं। राष्ट्रीय एकता ही राष्ट्रीय आन्दोलन का मूलाधार रही है तथा कवि ने भी आन्दोलन के राष्ट्रीय रूप को देखा तथा राष्ट्रीयता की भावना जगाते हुए राष्ट्रीय एकता प्रतिपादित करने की चेष्टा की है। इस उद्देश्य में कवि सफल रहा है।

2. सत्य-अहिंसा का महत्त्व– प्रस्तुत काव्य के नायक राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी सत्य और अहिंसा के पुजारी हैं। सत्य और अहिंसा इन दो अस्त्रों के बल पर ही उन्होंने शक्तिशाली विदेशी शासकों को देश छोड़ने तथा भारत को स्वतन्त्र करने के लिए विवश कर दिया। गाँधीजी ने सभी देशवासियों को सत्य और अहिंसा का पाठ पढ़ाया। यह काव्य हमें सन्देश देता है कि सत्य और अहिंसा सर्वश्रेष्ठ मानवीय गुण है और इनके बल पर बड़े-से-बड़े लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। अहिंसा के ही द्वारा बापू ने एकता का सम्पादन किया था—

अहिंसा ने अजब जादू दिखाये।
विरोधी हैं खड़े कन्धा मिलाये।।

3. देश-प्रेम की भावना को जगाना– कवि अपनी रचना द्वारा भारतीय जनों के हृदय में भारत के गौरवमय अतीत का वर्णन करके देश-प्रेम की भावना जगाना चाहता है—

जिसने धरती पर मानवता का पहला जयघोष किया था।
बर्बर जग को सत्य-अहिंसा का पावन सन्देश दिया था।

इस प्रकार कवि भारत के अतीत की झाँकी प्रस्तुत करके भारत की वर्तमान अधोगति के प्रति भारतीयों के हृदय में टीस, आक्रोश एवं चेतना जगाना चाहता है।

4. मानवतावाद– कवि मानवतावाद का उद्घोषक है। मानवतावाद की स्थापना ही कवि का चरमोद्देश्य माना जा सकता है। बापू के मानव-मानव में भेदरहित विचारों का पोषण करना ही कवि को मन्य रहा है। धर्म, देश, जाति, रंग आदि की सीमाओं से ऊपर वे मानव को मानव देखने के पक्षपाती रहे हैं।